

## वागर्थ के गौरव : कवि केदारनाथ अग्रवाल

प्रो. चंद्रकांत सिंह

प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,

धौलाधार परिसर-एक, धर्मशाला, जिला-कांगड़ा, हि.प्र.-176215 मो. न.- 09805792455

### शोध-सारांश-

कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में सृजन की अपूर्व छाप है। यह सृजन कवि के व्यक्तिगत स्वार्थ एवं लाभ-हानि के लिए नहीं प्रत्युत जनता के लिए है। कवि जनता के लिए लिखते हैं, उनकी कविताओं का गहन अर्थ है जिसे रूपवाद के साँचे में आबद्ध कर नहीं देखा जा सकता। शब्द के गहरे बोध का पता उनके लेखन से चलता है। शब्दों की जुगाली करते हुए सत्ता के गीत गाने वाले कवियों में उनकी समाई नहीं है और न ही जनता के सपनों को निगलने वालों में ही उनकी गिनती होती है। उनकी कविता विराट है जिसमें जीवन की सचाईयाँ उभरती हैं, जिन्हें कवि भाव-भाषा, शब्द-कौशल की जुगत से खड़ा करते हैं। एक अर्थ में यह कला या बाजीगरी भी नहीं बल्कि यथार्थ की गहरी ध्वनियाँ हैं जिनमें रूप-रस, जरा-मरण, जीवन-मृत्यु के साथ वे सभी उपक्रम हैं जिनसे जीवन बनता है। कवि ने जीवन का यथोचित सम्मान किया है, जीवन से ही उनकी कविता अर्थकरी एवं महत्वपूर्ण बनती है। जीवन अनुभव से गुजरते हुए कवि यथार्थ के उस शिखर तक पहुँचते हैं जहाँ जीवन का आशय स्वार्थ-लिप्सा या भौतिक चकाचौंध भर नहीं है। भोगवृत्ति एवं अवसरवादिता के कुहासे से विलग उनकी कविता को गहरे आत्म-विवेक की कविता कहा जा सकता है। जहाँ सच को निर्भीक होकर कहने एवं झूठ के किलों को ललकारने की हिम्मत है। इसी के बल पर कवि बड़े से बड़े अवसरवादियों की टोह लेते हैं और सत्य का रूपक रचते हैं।

**बीज शब्द-** भाव-भाषा, प्रणय, प्रगतिशीलता, सामाजिक-बोध, धरती, राग, सौंदर्य

### प्रस्तावना-

कई बार कवियों के लिए कविता का आशय केवल शब्द एवं अर्थ की छायाओं की व्याप्ति भर है। कवि केदारनाथ अग्रवाल हर प्रकार के शब्दजाल से ऊपर उठकर भाव-जल की संहति पर विश्वास रखते हैं। यही कारण है कि उनकी कविता चमत्कार नहीं है बल्कि सत्य, नैतिकता एवं आत्म-जगत का प्रकाश है जिसके बल पर कवि वास्तविक सत्य की निर्मिति चाहते हैं। कवि के लिए रचना-प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचना-प्रक्रिया 'स्व' से प्रारम्भ होकर 'पर' तक पहुँचती है और एक विस्तृत रूप ग्रहण करती हुई इससे भी आगे निकल जाती है। एक गहरे अर्थ में उनकी कविता को आत्म से अनात्म का संलाप रचती हुई गहरे जीवन-बोध की कविता कहा जा सकता है जहाँ जीवन का उत्सव है, मस्ती है आह्लादकता है और इन सबसे ऊपर दूसरों के दुखों में रमने और भींगने का मन है।

केदार जी की कवितायें आकार में छोटी हैं। कई बार इनके स्थापत्य एवं वागर्थ को देखकर लगता है मानो जीवन के निमिष पलों की अभिव्यक्तियाँ साकार हो उठी हों। विराट समुद्र की तरह फैले हुए यथार्थ को कवि देखते हैं, मुस्कराते हैं और उन्हें कविता में ढालते हैं। अनगढ़ता, विराटता एवं व्यापकता को सघनता के साथ अतारने का काम कवि करते हैं। इस गहरे अर्थ में उनकी कविता बड़ी है क्योंकि उसका ओर-छोर बड़ा है। यहाँ निजता की अभिव्यक्ति, प्रणय का खट-राग एवं युवा-

मन की मुश्किलें हैं जिन्हें कवि ने जिया है। यही कारण है कि बांदा के जनजीवन को दर्शाने के बाद भी कवि की कवितायें देश-काल की सीमा से ऊपर विस्तीर्ण कैनवस का चुनाव करती हैं।

कवि के लिए कविता का प्रयोजन स्पष्ट है। वह आत्मलोभ या लालसा के लिए नहीं लिखते बल्कि व्यापक जन-जागृति के लिए लिखते हैं। इसलिए कविताओं को परिवर्तनकारी अग्नि-रेखा भी कह सकते हैं। जो कवि के मन को आर्द्र करने के साथ जीवन का गहरा सोदेश्य लेकर चलती हैं। अपने होठों की मुस्कराहट को बनाये रखने के साथ कवि दूसरों के जीवन में खुशनुमा बताश लाने की भावना से साहित्य रचते हैं इसलिए उनकी कविता पर-पीड़ा से नम और जीवन को उर्वर बनाने वाली महत्वपूर्ण जीवन-धारा है।

'आस्था का शिलालेख' केदारनाथ अग्रवाल की जीवन पर अथाह विश्वास की कविता है। अत्यंत मौन रहकर कवि जीवन के सौंदर्य को बचाए रखते हैं। कवि की कविता में आशा की अभिव्यक्ति है। इस संदर्भ में कवि लिखते हैं-

मैं हूँ अनास्था पर लिखा

आस्था का शिलालेख

नितान्त मौन,

किन्तु सार्थक और सजीव

कर्म के कृतित्व की सूर्याभिमुखी अभिव्यक्ति ;

मृत्यु पर जीवन के जय की घोषणा।

कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'तुम मिलती हो' प्रेयसी के सानिध्य एवं नैकट्य की कविता है। इस कविता में अग्रवाल जी सहज प्रेम को स्वीकारते हैं। प्रेयसी की सहजता एवं अबोधता पर टिप्पणी करते हुए वह कहते हैं-

तुम मिलती हो

हरे पेड़ को जैसे मिलती धूप,

आँचल खोले,

सहज

स्वरूपा।

'फूल-से दिन' कविता जीवन-उत्सव की कविता है जिसमें कवि ने उत्साह और अतिरेक में भीगे हुए पल को याद किया है। इस कविता को प्रणय-राग की कविता कहा जा सकता है जिसमें जीवन के प्रति एकनिष्ठता का बोध मिलता है। इन्द्रियों की गहन तृप्ति केदार जी के यहाँ है, एक-एक इन्द्रियाँ सौंदर्य के रूप-चित्र पर रीझती हैं और आकंठ डूब जाती हैं-

गेंदे के फूल-से

फूले हैं दिन,

आओ तुम आओ तो

गुलाब भी खिलें,

बाहों से बाहों में एक हो मिलें,

मिलने के फूल-से

फूले हैं दिन।

पति-पत्नी का रिश्ता नेह-छोह पर टिका होता है। उसमें किसी भी तरह के दुराव-छिपाव की आकांक्षा नहीं होती बल्कि सब कुछ नेह के जल से भोगा हुआ पारदर्शी होता है। जिसमें पारस्परिक सम्मान के साथ हल्की नोक-झोंक भी चलती रहती है।

‘तुम-हम’ कविता गार्हस्थ्य जीवन को दर्शाती है जहाँ जर्जर स्वास्थ्य के साथ रिश्तों की तापहीन शुष्कता को कवि ने स्वर देना चाहा है। कवि केदार लिखते हैं-

सत्ताइस साल में तुम  
न तुम रह गए तुम  
न हम रह गए हम  
तुम हो गए खूँखार  
हम हो गए बीमार  
अभाव-ग्रस्त लाचार

कवि केदारनाथ अग्रवाल जी के यहाँ शमशेर की कविताओं की तरह रंगों का इन्द्रधनुषीय प्रयोग दिखता है। यह अलग बात है कि शमशेर की कविता में प्रेम और क्रांति के गीत जहाँ मिलते हैं वहीं रंगों का जगत दिखता है। जबकि केदार जी की कविताओं में पुरे निसर्ग के सौंदर्य में रंग की छटाएँ उभरती हैं। उनकी कविताओं में भाँति-भाँति के रंग हैं जो जीवन को गंभीर अर्थ देते हैं। फूलों की गंध से लेकर प्रकृति की रूप-माधुरी तक विविध रंगों का उत्सव वहाँ है। जीवन से उपजे रंगों के उठाव को जीवन की परिभाषा कह सकते हैं। फूलों के प्रतीक द्वारा कवि ने प्रणय और रास के सुंदर पलों की रचना की है जिसमें हर्ष के वातावरण के साथ जीवन की अपूर्व साझेदारी है-

फूलों ने  
होली  
फूलों से खेली  
लाल  
गुलाबी  
पीत-परागी  
रंगों की रंगरेली पेली  
काम्य कपोली  
कुंज किलोली  
अंगों की अठखेली ठेली

केदार जी जीवन से अतिशय प्रेम करते हैं इसलिए जहाँ भी वह सौंदर्य, कोमलता और भावमयता देखते हैं वहाँ भीतर तक रमते-रीझते दिखते हैं। उनकी कविता को निर्दोष हृदय की कविता कहा जा सकता है, जहाँ जीवन का अबोधन है जिसे बचाए रखने की चिंता के साथ कवि की कविता का रूप खुलता है।

अच्छा लगता है  
जब कोई  
बच्चा खिल-खिल  
हँसता है।  
वैभव का विष  
तुरत उतरता है।  
जीने में  
सचमुच जीने का  
सुख मिलता है।

कवि केदार उद्दाम आकर्षण के कवि हैं, उनकी कविताओं में प्रेम का निश्चल रूप है। कवि ने यहीं से चाह के जगत में प्रवेश किया है। उनकी कविताओं में रूप के जगत में विचरण करने की आतुरता है और यही आतुरता कवि को प्रेम के मार्ग का धीर-पथिक घोषित करती है।

कवि अपनी प्रेयसी की तुलना पूर्णिमा के चाँद से करते हैं जिसकी रूप-छवि में सम्मोहन है, ऐन्द्रजालिक अनुभव है जिसे कवि ने बारहा महसूस किया है। कवि प्रेयसी के सौन्दर्य पर लिखते हुए कहते हैं-

तुम  
पूनम के  
चंद्रोदय हो  
मैंने  
तुम पर  
तन-मन वारा  
जब  
आँखों ने  
तुम्हें निहारा

‘न बुलाओ तुम मुझे’ कविता में कवि व्यक्तिगत प्रेम की बजाय अपनी सामाजिक भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं। यह कविता जीवन के प्रति गहरे विश्वास की कविता है जिसमें विषम जीवन की एक-एक साँस को बचाए रखने का यत्न कवि द्वारा हुआ है। निजी संबंधों के शिविर से निकलकर समाज को जीवन देने की उदग्र प्यास इस कविता में मिलती है। यहाँ कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता कवि को अपने समय का बड़ा कवि सिद्ध करती है-

न बुलाओ तुम मुझे इस समय अपने पास  
खोदनी है अभी मुझे  
आसपास उग आई बेकार विचारों की घास,  
तोड़ने हैं मुझे अभी  
भाव की भूमि की कुंठा के बाँस,  
जोड़नी है मुझे अभी  
टूट चले जीवन की एक-एक साँस !  
न बुलाओ तुम मुझे इस समय अपने पास।

कवि केदारनाथ अग्रवाल जीवन की जीवटता को स्वीकारते हैं। उनकी कविता में संघर्षों की लोमहर्षक ध्वनियाँ जिनको कवि ने बखूबी चित्रित किया है। ‘समय बदला’ कविता में केले के पेड़ के माध्यम से कवि ने जीवन में हार न मानने और पुरजोर हौसला रखने की बात कही है। विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में कवि की कविता प्रेरणा देती है। एक तरह से कहें तो उनकी कविता को गत्यात्मकता की कविता कहा जा सकता है। जहाँ बदलते हुए जीवन की पल-छिन रेखाएँ हैं जिन्हें चिन्हित करते हुए कवि कहते हैं-

समय बदला  
कटे पत्ते बड़े लम्बे हौंसलों के;  
खड़ा केला  
जड़ें गाड़े  
अब अकेला;  
तना भर है  
जिए चाहे जिए जैसे  
बना भर है  
हरा हरदम गया  
गम से नहीं दहला !

कवि सत्य के पक्ष में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। उनकी कविताओं में असत्य की केंचुल उतरती दिखती है। उनका अपरिमित विश्वास है कि सत्ता के मद में चूर व्यक्ति चाहे जितना स्वांग कर लें, सत्य आखिर एक दिन सामने आता ही है। सचाई के रास्ते पर चलते हुए अपनी प्रतिबद्ध जीवन-दृष्टि से वह नए समाज के निर्माण की आकांक्षा रखते हैं। ‘झूठ नहीं सच होगा साथी!’ कविता में अग्रवाल

जी लिखते हैं-

झूठ नहीं सच होगा साथी!  
गढ़ने को जो चाहे गढ़ ले  
मढ़ने को जो चाहे मढ़ ले  
शासन के सौ रूप बदल ले  
राम बना रावण सा चल ले

झूठ नहीं सच होगा साथी!  
करने को जो चाहे कर ले  
चलनी पर चढ़ सागर तर ले  
चिउंटी पर चढ़ चाँद पकड़ ले  
लड़ ले एटम बम से लड़ ले

झूठ नहीं सच होगा साथी!

भारत की पंचवर्षीय योजनाओं की कवि केदार समीक्षा करते हैं। विदेशी मुद्रा के प्रसार और निवेश के अबाध प्रसार को उन्होंने शब्द देना चाहा है। उनकी 'वास्तव में' कविता भारत के दुर्भाग्य को दिखाती है जहाँ आर्थिक विषमता की तसवीरें हैं। कवि ने ऋण के बोझ तले दबे हुए भारत की तस्वीर को मुखर अभिव्यक्ति देनी चाही है। भारत की विदेश नीतियाँ किस तरह विफल होती हैं और जनता के दुर्भाग्य का उदय होता है इसे कवि ने भाषिक अभिव्यक्ति दी है। कवि केदारनाथ अग्रवाल लिखते हैं-

पंचवर्षी योजना की रीढ़ ऋण की शृंखला है,  
पेट भारतवर्ष का है और चाकू डालरी है।  
संधियाँ व्यापार की अपमान की कटु ग्रंथियाँ हैं  
हाथ युग के सारथी हैं, भाग्य-रेखा चाकरी है।

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में रोमान के साथ-साथ प्रगतिशील जीवन-दृष्टि भी मिलती है। कवि को सबसे अधिक भरोसा शब्द पर है उनका मानना है कि उनके गीतों के द्वारा सामाजिक हलकों में व्यापक परिवर्तन घटित होगा। उनके गीत यथास्थितिवादिता की चूलें हिला देंगे। उनकी कविताओं में राग के सौंदर्य के साथ आग के दहकते अंगारे हैं जिनका उपयोग कवि समाज की जिजीविषा-शक्ति के पक्ष में करते हैं। क्रांतिदूत की शक्ति में कवि ने लिखा है-

मालवा में गीत मेरे गूँज जाएँ,  
मैं यहाँ पर गीत गाऊँ,  
वह वहाँ पर घनघनाएँ,  
मालवा में आग का डंका बजाएँ।

मालवा में गीत मेरे गूँज जाएँ,  
मैं यहाँ से नाग छोड़ूँ,  
वह वहाँ पर फनफनाएँ,  
मालवा में क्रांति का भूचाल लाएँ।

मालवा में गीत मेरे गूँज जाएँ,  
मैं यहाँ से तीर मारूँ,  
वह वहाँ पर सनसनाएँ,  
मालवा में रक्त की ज्वाला जलाएँ।

कवि को जीवन धरती से प्राप्त होता है, इसी धरती में रच-बसकर उनका जीवन पुष्प विहंसता है। अकेलेपन के घुप्प एकाकीपन को अस्वीकृत करते हुए कवि ने सामूहिक जीवन को स्वीकारा है। उनकी कविताओं में लोक का उत्सव है, प्रकृति की स्निग्धता है और कर्मरत

है जिससे कवि को अनुभव की तराश मिलती है। युग को परिवर्तित करने वाले महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में उन्हें देखा जा सकता है। उनकी कवितायें नये युग का प्रस्थान बिंदु कही जा सकती हैं। कवि लिखते हैं-

मेरा फूल नहीं खिलता है,  
सने और अकेलेपन में,  
सनेपन के जर्जर वन में,  
बंध्या धरती के आँगन में।

मेरा फूल सदा खिलता है,  
ऊँचे चौड़े वक्षस्थल पर,  
कर्मठ हाथों के करतल पर,  
युग के बजते पल प्रतिपल पर।

चूँकि कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति के राग-रंग से जीवन प्राप्त करते हैं इसलिए उनकी कविताओं में जड़ता नहीं है बल्कि गतिशीलता है जिसे वह नया रूप देते हैं। धरती, खेत, फसल, श्रम, पसीना आदि उनके प्रिय रूपक हैं जिन्हें कविता में कवि लगातार रचते हैं। उनकी कविता को किसान-बोध की कविता कहा जा सकता है। एक नए युग का स्वप्न लिए उनकी कविताएँ मेहनत और श्रम का राग रचती हैं। इन कविताओं में जीवन को प्रभावकारी, अर्थयुक्त बनाने की लालसा है, साथ ही नए सौंदर्य-बोध के निर्माण का अपूर्व स्वप्न भी। 'किसानों का गाना' कविता परत-दर-परत विषमता, शोषण एवं अनाचार को खोलती चलती है। इस कविता में गहन उत्खनन है, कवि धरती के गर्भ से मूल्यवान् थाती संजोकर लाने के पक्षपाती हैं। उन्मुक्त हृदय से जनवाद पर लिखते हुए वह कहते हैं-

हमारे हाथ में हल है,  
हमारे हाथ में बल है,  
कि हम बंजर को तोड़ेंगे-  
बिना तोड़े न छोड़ेंगे।

कड़ी धरती इधर भी है,  
कड़ी धरती उधर भी है,  
कि हम उसको विदारेंगे-  
न चूकेंगे, न चूकेंगे।

पसीना खूब सींचेंगे,  
रुधिर सारा उलीचेंगे,  
कि हम मिट्टी भिगोएँगे-  
छने आटे-सी माड़ेंगे।

कवि की भाषा जीवन की भाषा है इसलिए इसमें खुरदरापन है, जीवन की तपिश है और संघर्षधर्मी चेतना है। 'वह जन मारें नहीं मरेगा' कविता में कवि ने आँधियों से लड़ने वाले, कभी भी पराभूत न होने वाले आम जनजीवन को अभिव्यक्ति देनी चाही है। कविता की भाषा आम फहम है लेकिन इसमें जीवन का आर्तनाद है। जीवन में गहरे धँसकर जीवन का अर्थ खोजने वालों को सच्ची श्रद्धांजलि कवि ने देनी चाही है। जीवन का आसव पीकर बड़े होने वाले भूमि-पुत्रों पर लिखते हुए कवि का मन पसीज उठता है। उनकी कविताओं में धरती की सुगंध को बचाकर रखने वाले किसानों की मक-कथा है जिसे कवि ने बानी देनी चाही है। कवि का मानना है कि दुखों और व्यथाओं के जंगल में रहने वाले इन मनुष्यों का काल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उनकी जीवनी-शक्ति को अजेय मानते हुए उनकी सफलता के लिए

कवि-मन कामना करते हैं | कवि केदार स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं-  
**जो जीवन की धूल चाटकर बड़ा हुआ है,  
 तफानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है,  
 जिसने सोने को खोदा, लोहा मोड़ा है,  
 जो रवि के रथ का घोड़ा है,  
 वह जन मारे नहीं मरेगा,  
 नहीं मरेगा !!**

कवि केदार जीवन पर लिखते हुए जीवन के विस्तीर्ण फलक को आधार बनाते हैं | उनकी कविता में प्रकृति, प्रेम, संघर्ष की ध्वनियों के साथ विरूपित छवियों का भी चित्र है | जहाँ बदले हुए चेहरे लिये हुए कई लोग हैं जो समाज की आवाज़ दबाने की कोशिश करते हैं | जिन्हें राजनीति में रस है, जो सत्य एवं ईमानदारी की चादर ओढ़े हुए सत्य को पराभूत करने की प्रवृत्ति लिए हुए हैं | कवि ऐसे दोमूँहे लोगों की कथनी-करनी के भेद को न केवल खोलते हैं बल्कि उन्हें जिंदगी के लिए बड़ा अभिशाप मानते हैं | मार्क्सवाद में आस्था होने के बाद भी कवि केदार को कहने में ज़रा भी संकोच या हिचक नहीं है कि कुछ लोग सभ्यता की आड़ में अपनी नृशंसता का परिचय दे रहे हैं | जिनके कृत्यों से मानवता शर्मसार है जो जनवाद की आड़ में मनुष्यता का लह पी रहे हैं | 'जिन्दगी' कविता में ऐसे झूठे लोगों की कलाई कवि ने खोली है, वह व्यंग्य की मुद्रा में कहते हैं-

**देश की छाती दरकते देखता हूँ !  
 मैं अहिंसा के निहत्थे हाथियों को,  
 पीठ पर बम बोझ लादे देखता हूँ ।  
 देवकुल के किन्नरों को,  
 मंत्रियों का साज साजे,  
 देश की जन-शक्तियों का,  
 खून पीते देखता हूँ ,  
 क्रांति गाते देखता हूँ !!**

#### निष्कर्ष-

केदारनाथ अग्रवाल की कविता भाव और शिल्प की अद्भुत पच्चीकारी है | कवि ने कोमल-अनगढ़, सौंदर्य-घृणा, रूप-अरूप, दृश्य-अदृश्य का ऐसा देशांतर अपनी कविता में खींचा है जो लोमहर्षक है | जीवन को बचा कर रखने की चाह लिए कवि की कवितायें दुःख एवं पीड़ा की कथायें हैं जिनसे कवि ने कविता को बना है | शब्दों के कई पर्याय, सुंदर एवं मनोहारी रूप लिये हुए उनकी कविता में प्रकट होते हैं | कवि एक-एक शब्द को ऐसे पिरोते हैं जैसे वे मणिमुक्ताएँ हों और उनका गंभीर अर्थ हो | मानवता की आँख का जल बचाने की चिंता कवि को सालती है, उनसे उद्यम भी कराती है और कविता के द्वारा एक नई रोशनी लेकर प्रकट होती है | उनकी कविता को महज कौशल समझना भारी भूल होगी, असल में उनकी कविता का वागर्थ जनमानस की आशा का प्रदीप है जिसे हर हाल में कवि रोशन चाहता है | ताकि संघर्षों एवं अंधेरों में रास्ता उदास एवं हताश न हो | कवि की कविता प्रतिरोध का शिविर है और सौंदर्य का अभिलेखागार | जहाँ भाँति- भाँति के दृश्य हैं जिनसे न केवल कवि के मानस का विस्तार होता है बल्कि पाठक की मनोभूमि का भी परिष्कार होता है | उनकी कविता में छिपे अर्थ के वैभव को देखकर पाठक न केवल जीवन-ऊर्जा प्राप्त कर सकेंगे बल्कि राग की शीतलता से मन की शांति का अनुभव कर सकेंगे जो कभी भी स्फूर्तिहीन एवं स्पंदनहीन न होगी | एक गहरे अर्थ में कह सकते हैं कि कवि केदारनाथ अग्रवाल शब्द-शिल्पी हैं जिनके एक-एक अक्षर में धरती का सोया हुआ राग है जो सहृदय को रस-सिक्त करने में समर्थ होगा | जिनकी कविताओं के पाठ से निश्चय ही सुंदर भविष्य का निर्माण हो सकेगा |

#### संदर्भ सूची :-

1. केदारनाथ अग्रवाल, 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-148
2. केदारनाथ अग्रवाल, 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-150
3. केदारनाथ अग्रवाल, 'पंख और पतवार', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-106
4. केदारनाथ अग्रवाल, 'कहें केदार खरी-खरी', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-186
5. केदारनाथ अग्रवाल, 'खुली आँखें खुले डैने', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-54
6. केदारनाथ अग्रवाल, 'खुली आँखें खुले डैने', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-56
7. केदारनाथ अग्रवाल, 'खुली आँखें खुले डैने', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-80
8. केदारनाथ अग्रवाल, 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-16
9. केदारनाथ अग्रवाल, 'अपूर्वा', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-22
10. केदारनाथ अग्रवाल, 'कहें केदार खरी-खरी', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-98
11. केदारनाथ अग्रवाल, 'कहें केदार खरी-खरी', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-110
12. केदारनाथ अग्रवाल, 'खुली आँखें खुले डैने', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-95
13. केदारनाथ अग्रवाल, 'खुली आँखें खुले डैने', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-96
14. केदारनाथ अग्रवाल, 'गुलमेंहदी', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या- 67
15. केदारनाथ अग्रवाल, 'गुलमेंहदी', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या- 131
16. केदारनाथ अग्रवाल, 'कहें केदार खरी-खरी', संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या-65